शुक्र विशेषांक
मूल्य : 40/-
भारतीय प्राच्य विद्याओं की मासिक पत्रिका
192वां अंक
astroblessings Venture®
ISO 9001:2008

ज्योतिष मंथन®

मई-2015 वर्ष - 16 अंक - 12 विक्रम संवत् 2072, शक संवत् 1937

- शुक्र - भोर का तारा
- शुक्र और संचार क्रांति
- शुक्र विभिन्न नक्षत्रों में
- शुक्र के अद्भुत रंग

शनि विशेषांक
193वां अंक
मूल्य : 40/-
astroblessings Venture®
ISO 9001:2008
जून-2015

ज्योतिष मंथन®

विक्रम संवत् 2072, शक संवत् 1937
भारतीय प्राच्य विद्याओं की मासिक पत्रिका
वर्ष - 17 अंक - 1

- शनि
- सम्मोहक शनि
- शनि का वास्तविक रूप
- क्रांतिकारी शनि

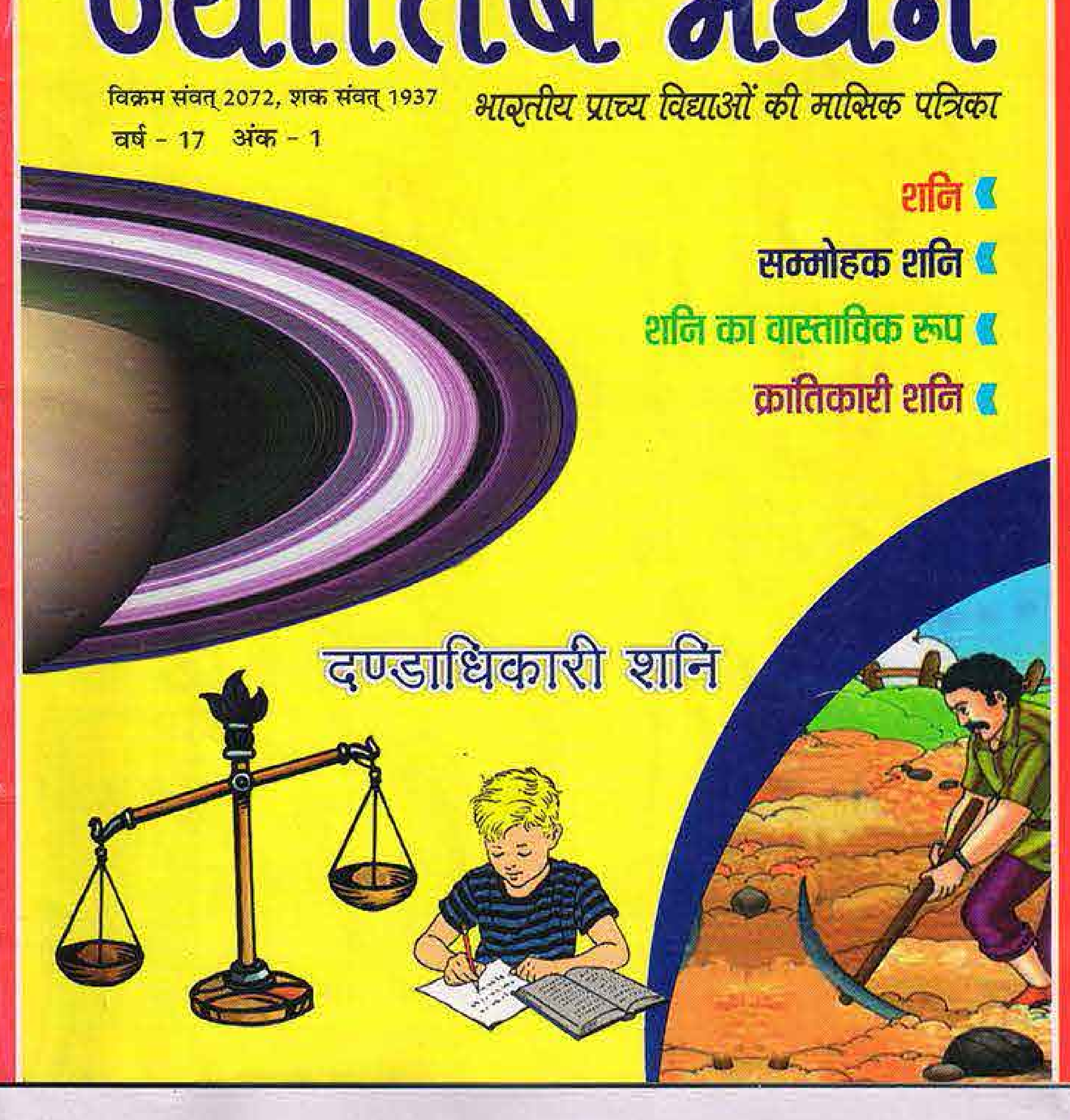

वंशवृद्धि

आचार्य के. विमलेन्दु

अपने वंश को आगे चलाने की इच्छा संसार के प्रत्येक व्यक्ति को होती है। चाहे किसी भी जाति, धर्म, सम्प्रदाय का क्यों न हो ? यह प्रकृति की लीला है कि संतान के रूप में किसी को केवल पुत्र की प्राप्ति होती है, किसी को केवल पुत्री की प्राप्ति होती है, किसी जातक को पुत्र और पुत्री दोनों की प्राप्ति होती है परन्तु कई दम्पत्ति ऐसे हैं कि उन्हें संतान सुख की प्राप्ति नहीं होती है। संतानहीनता के लिए पुरुष या स्त्री दोनों में से किसी एक के शारीरिक क्षमता में कमी होना उत्तरदायी हो सकता है परन्तु कई बार ऐसा भी देखने में आया है कि पति-पत्नी दोनों में कोई दोष नहीं है फिर भी संतान सुख नहीं मिल पाता है। इसका कारण ज्योतिष विज्ञान के अतिरिक्त और किसी के पास नहीं है। वस्तुतभसंतान पूर्वजन्म के संचित पाप और पुण्य कर्मों के रूप में इस जन्म में प्रकट होती है।

संतानहीनता के अनेक योग ज्योतिष ग्रन्थों में दिए गए हैं। संकेत निधि, सारावली, जातक परिजात, बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, फल दीपिका आदि ग्रन्थों के आधार पर सन्तानहीनता के कुछ योगों पर दृष्टिपात करते हैं और इसके आधार पर कुछ संतानहीन पुरुष और स्त्री (युग्म) की कुण्डली का विश्लेषण करते हैं।

सखलेऽर्क सुतेऽन पत्यताऽसृजी गर्भच्युतिरस्त्यपत्यहा।
रविरात्मजगो बलोज्झितभ शिखिराहू यदि कुत्सितः सुतः॥

(संकेत निधि 4.4)

पंचम भाव में शनि की पाप ग्रह से युति संतानहीनता बनाती है। पंचमस्थ मङ्गल की पाप ग्रह से युति दृष्टि गर्भपात का कारण बनती है। निर्बल सूर्य पंचम भाव में स्थित होकर पाप दृष्ट हों तो संतान हानि कराते हैं। पंचम भाव में सूर्य की राहु या केतु से युति हों तो पुत्र दुराचारी व कुत्सित स्वभाव का होता है।

रंध्रे शशांकत्सहिते तु पापैर्वंशस्य विच्छेदकरोत्र जातः।
पापे विलग्ने सुखगे शशांके लग्नेश्वरे पंचमराशियुक्ते॥

(सारावली 34.27)

अर्थात् चन्द्रमा से अष्टम भाव में पाप ग्रहों की युति हो अथवा लग्न में पापग्रह चतुर्थ भाव में चन्द्रमा तथा पंचम भाव में लग्नेश होने से जातक वंशवृद्धि नहीं कर पाता। लग्न में पाप ग्रहों की युति बहुधा आत्मबल की हानि कर मनुष्य का दुःख बढ़ाती है। पंचम भाव में लग्नेश का होना शुभ है किन्तु पाप ग्रहों से युत और दृष्ट लग्नेश पंचमस्थ होने पर संतान का अभाव दर्शाता है।

बलैर्विहीने यदि पुत्रनाथे वंशस्यविच्छेदकरोत्र जातः।
क्षीणे शशांके तनुभाव युक्ते मूढान्विते मंद गृहे सुरेज्ये॥

(सारावली 34.28)

पंचमेश हीनबली होने पर वंशविच्छेदक बनता है। इसी प्रकार बलहीन चन्द्रमा यदि लग्नस्थ हों तथा शनिक्षेत्री होकर अस्त हों तो जातक वंशविच्छेदक बनता है।

त्रिकोणगैः पापखगैश्च सर्वैः प्रागेव पुत्रस्य सुखस्य नाशः।
चंद्रात्मजे पंचमराशि युक्ते लग्ने सुखे वा यदि पापयुक्ते।।

(सारावली 34.29)

सभी पाप ग्रह त्रिकोण (5/9 वें भाव) में हों तथा चन्द्रमा के पुत्र बुध पाप ग्रहों के साथ लग्न चतुर्थ या पंचम भाव में हों तो संतान सुख का नाश हो जाता है।

शुभेतरैः पंचम भावयुक्तैन दृश्यते पुत्रसुखं हितेन।
जातो यदि स्यात्क्षिति सूनुलग्ने रंध्रे शनौ पंचमगे रवौ वा॥

(सारावली 34.30)

जिस मनुष्य के पंचम भाव में पाप ग्रह एकत्रित हों वह पुत्र सुख से वंचित होता है। इसी प्रकार जिसके लग्न में मङ्गल, अष्टम में शनि तथा पंचम में सूर्य हों तो जातक को संतान सुख का अभाव होता है।

पुत्रस्थे मदनाधिपे वितनयो जायाविहिनोऽथवा।
पुत्राद्दष्टनशत्रु रिष्फ गृहगाः पापा कुलध्वंसकाः॥

(जातक पारिजात 13.12)

सप्तमेश यदि पंचम भाव में हो तो जातक पुत्रहीन या पत्नी सुख से भी वंचित होता है। पंचम भाव से 6, 8, 12 वें अर्थात् लग्न से चतुर्थ, दशम तथा द्वादश भाव में पाप ग्रहों की स्थिति संतानहीन बनाकर कुल का नाश करती है।

गुरु लग्नेश दारेश पुत्रस्थानाधिपेषु च
सर्वेषु बलहीनेषु वक्तव्या त्वनपत्यता॥

(जातक पारिजात 13.24)

लग्नेश, पंचमेश, सप्तमेश तथा संतान कारक गुरु यदि सभी ग्रह निर्बल हों तो इसे संतानहीनता का योग कहते हैं।

पुत्र स्थानं गते पापे तदीशेनीचराशि गे।
शुभ दृष्टि विहीने तु वक्तव्या त्वनपत्यता॥

(जातक पारिजात 13.25)

पंचम भाव में पाप ग्रह स्थित हों तथा पंचमेश नीचराशिस्थ हो, पंचम भाव तथा पंचमेश दोनों ही शुभ ग्रह की दृष्टि से वंचित हों तो जातक संतानहीन होता है।

गुरु लग्न हिमांशूनां पंचमस्थैरशोभनैः।
शुभ दृग्योगरहितैर्वक्तव्या त्वनपत्यता॥

(जातक पारिजात 13.26)

लग्न, चन्द्रमा तथा गुरु से पंचम भाव, पाप ग्रह से युक्त तथा शुभ ग्रह की दृष्टि युति से वंचित होने पर संतानहीनता देता है।

पुत्र स्थानगते पापे तदीशे पाप मध्यगे।
सोमय दृग्योग रहिते वक्तव्या त्वनपत्यता॥

(जातक पारिजात 13.27)

पंचम भाव पाप ग्रह से युक्त हो तथा पंचमेश भी पाप मध्यत्व में हो, पंचम भाव और पंचमेश शुभ ग्रहों की दृष्टि युति से वंचित हो तो जातक संतानहीन होता है।

पापमध्यगते जीवे पुत्रेशे बलवर्जितेः।
सौम्यदृग्योगरहिते वक्तव्या त्वनपत्यता॥

(जातक पारिजात 13.28)

गुरु पापमध्यत्व में तथा पंचमेश हीनबली हो, इसके साथ पंचमेश तथा गुरु शुभ ग्रहों की दृष्टियुति से वंचित हो तो जातक संतानहीन होता है।

गुरोः सुतागारपतिः सपापो बलेनहीन मनुजो विपुत्रः।
अरावपापे निधने तदीशः सुतेन हीनो मनुजस्तदानीम्।।

(भाव कौतुहलम् 6.15)

गुरु से पंचम भाव का स्वामी हीनबली तथा पापग्रस्थ हो तो मनुष्य संतान सुख से वंचित होता है। यदि षष्ठेश अष्टमस्थ हो तथा षष्ठ भाव पाप युक्त हो तब भी जातक संतानहीन होता है।

अपत्यभावे यदि मंगलः स्यादपत्यराशिं विनिहन्ति सद्यः
अस्तांशगे पापयुते सुतेशे तदा न संतान सुखं वदन्ति।।

(भाव कौतुहलम् 6.14)

मंगल पंचमस्थ हों तथा पंचमेश सूर्य से अस्त व पापयुक्त हों अथवा नवांश कुण्डली में पंचमेश नीचस्थ हों तो विद्वानों का कथन है कि ऐसे व्यक्ति को संतानसुख नहीं मिलता।

तथैव भानुः खलु पंचमस्थे जातं च जातं विनिहन्ति बालम्।
लग्नेश्वरः पापयुतः सुतेशो व्ययष्टमे पुत्र सुखेन हीनः।

(भाव कौतुहलम् 6.16)

पंचमस्थ सूर्य संतान को कष्ट करने वाला होता है। यदि लग्नेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा पंचमेश भी अष्टम या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक पुत्र सुख से वंचित होता है।

गुरुः लग्नेशः दारेशः पुत्रस्थानाधिपेषु च।
सर्वेषु बलहीनेषु वक्तव्या त्वनपत्यता॥

(वृहत् पाराशर होरा शास्त्रम् 83.8)

गुरु, लग्नेश, सप्तमेश, पञ्चमेश ये सब निर्बल हों तो अनपत्य या सन्तानहीन योग बनता है।

रव्यारभराहुभशनयः सबलाः पुत्रभावगाः।
तदाऽनपत्यता चेत् स्युरबलाः पुत्रकारकाः॥

(वृहत् पाराशर होरा शास्त्रम् 83.8)

यदि सूर्य, मङ्गल, राहु, शनि ये सबल होकर पुत्रभाव में हों और पुत्र कारक यानि गुरु और पंचमेश निर्बल हों तो संतानहीनता के योग बनते हैं।

शेष पृष्ठ 78 पर...

रहेगा। आपके काम-काज के घंटे बढ़ जाएंगे और किसी साहस भरे निर्णय की आवश्यकता पड़ सकती है। तीसरे सप्ताह में राशि से तीसरे कई ग्रहों की उपस्थिति आपकी शक्ति सामर्थ्य बढ़ने का संकेत देती है परन्तु इस सप्ताह कोई ऐसा कार्य न करें जो आपके सामर्थ्य से बाहर हो। मई का अंतिम सप्ताह आपके लिए अधिक अनुकूल है क्योंकि वक्री बुध के आर्थिक परिणाम इस सप्ताह में आने लगेंगे। अब आपको पैसा भी चाहिए चाहे वह कहीं से भी आए। आपके काम-काज कम कोशिशों में ही बनने के आसार हैं। इस समय निकट रिश्तेदारों से लेन-देन की बातें चल सकती हैं और किसी मामलें सफल भी हो सकते हैं, कठिन शर्तें आपको पसन्द नहीं आएगी।

स्वास्थ्य: वात-विकार परेशान करेंगे। जो उम्रदराज हैं, उनको संधिवात की परेशानी रहेगी परन्तु जो मध्यायु के हैं उन्हें अपानवायु परेशान करेगी। खान-पान का स्तर आमतौर से ऊँचा ही रहेगा और आप बहुत ज्यादा परहेज नहीं कर पाएंगे।

रिश्ते-नाते: वैवाहिक सम्बन्ध आमतौर से सफल रहेंगे। घर-परिवार में अन्दर का खर्चा बढ़ता हुआ नजर आ रहा है। परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा किए जा रहे अपव्यय से आप नाराज रहेंगे। अपने रक्त सम्बन्धियों पर आप बहुत भरोसा करेंगे और उनके साथ कुछ नया शुरु करने की चर्चा रहेगी। अभी सिर्फ बातें ही हैं कुछ भी अमल में नहीं आएगा। नौकरीपेशा लोगों के लिए थोड़ा सा सावधान रहने की जरूरत है। बॉस की अप्रसन्नता कष्टकारक हो सकती है। आर्थिक लाभ का कोई अवसर अब हाथ से नहीं जाने देंगे चाहे उन व्यक्तियों से दूर-दराज का ही सम्बन्ध हो।

❖❖❖

...पृष्ठ 44 का शेष

फल दीपिका में भी आचार्य मन्त्रेश्वर ने अध्याय 12 श्लोक 2 में संतानहीनता के योग को इस प्रकार बतलाया हैं

लग्नामरे ड्यशशिनशं सुतभेषु पापैर्युक्तेक्षितेष्वथ शुभैरयुतेक्षितेषु। पापोभयेषु सुतभेषु सुतेश्वरेषु दुःस्थानगेषु न भवन्ति सुताः कथंचित्॥ (फल दीपिका 12.2)

लग्न, चन्द्र और गुरु से पंचम भावों में पाप ग्रहों की युति, दृष्टि हों और शुभ ग्रहों की युति या दृष्टि न हो। इसी प्रकार लग्न, चन्द्र और गुरु से पंचम भाव पापग्रहों के बीच में हों या ये तीनों पंचमेश 6, 8, 12 भावों में गए हों या सभी नीच के या अतंगत हों तो संतान होने में बाधा होती है।

इसी अध्याय में संतानहीनता के लिए श्लोक 14 में क्षेत्र और बीज स्फुट की गणना करने की विधि दी गयी है जो अतिमहत्त्वपूर्ण है। इसके आधार पर संतानहीनता के लिए कौन उत्तरदायी है इसका विचार होता है- पुरुष, स्त्री या दोनों।

क्षेत्र स्फुट जानने के लिए स्त्री की कुण्डली में गुरु स्पष्ट, चन्द्र स्पष्ट और मङ्गल स्पष्ट को राशि, अंश और कला तक जोड़ लिया जाता है। यह योगफल यदि सम राशि और सम नवांश में पड़े तो स्त्री संतान उत्पन्न करने में सक्षम है और हम मानते हैं कि क्षेत्र बली है। इसी प्रकार यदि राशि और नवांश दोनों विषम हों तो कह सकते हैं कि स्त्री संतान उत्पन्न करने में सक्षम नहीं है।

बीज स्फुट के लिए पुरुष की कुण्डली में गुरु स्पष्ट, सूर्य स्पष्ट और शुक्र स्पष्ट को राशि, अंश और कला तक जोड़ लिया जाता है। यह योगफल यदि विषम राशि और विषम नवांश में पड़े तो पुरुष संतान उत्पन्न करने में सक्षम है और हम मानते हैं कि बीज बली है। दोनों सम हों तो दुर्बलता का द्योतक है। सम और विषम राशि एवं नवांश स्त्री-पुरुष में से किसी का होता है तो उसे मध्यम बली माना जाता है।

उपरोक्त शास्त्रों में वर्णित नियमों के महत्वपूर्ण एवं मूल सिद्धान्तों (बिन्दुओं) को क्रमवार लेते हैं।

लग्नेश, पंचमेश, सप्तमेश तथा संतान कारक गुरु यदि सभी ग्रह निर्बल हों, पापग्रह से युक्त, दृष्ट हों या 6, 8, 12वें भाव में हों तो इसे अनपत्यता या संतानहीनता का योग कहते हैं। इसे भाव चलित के द्वारा भी देखना आवश्यक है।

पंचम भाव में पाप ग्रह स्थित हों या पंचम भाव पाप मध्यत्व में तथा पंचमेश पाप ग्रह के साथ युक्त, दृष्ट हों या पाप मध्यत्व में हो या नीच राशिस्थ हो या 6, 8, 12 वें भाव में हों, पंचम भाव तथा पंचमेश दोनों ही शुभ ग्रह की दृष्टि से वंचित हों तो जातक संतानहीन होता है।

लग्न, चन्द्रमा तथा गुरु से पंचम भाव, पाप ग्रह से युक्त या पाप ग्रहों के मध्य में हों तथा शुभ ग्रह की दृष्टि युति से वंचित होने पर संतानहीनता देता है।

नोट-उपरोक्त योगों को नवांश और सप्तमांश कुण्डलियों में भी विचार करना चाहिए। अष्टक वर्ग में 25 या उससे कम बिन्दु पंचम भाव को प्राप्त हों तो भी संतान सुख में कमी आता है।

स्त्री के लिए क्षेत्र स्फुट और पुरुष के लिए बीज स्फुट उत्तम, मध्यम या निर्बल हैं। इसकी गणना के आधार पर संतानहीनता का विचार किया जाता है। अगले अंक में हम इस नियम को कुछ कुण्डलियों के माध्यम से समझने का प्रयास करेंगे।

❖❖❖

वंशवृद्धि

आचार्य के. विमलेन्दु

बृहत पाराशर होरा शास्त्र में अनपत्य योग को पितृ शाप, मातृशाप, भ्रातृशाप, मातुलशाप, पत्नीशाप, प्रेतशाप आदि से जोड़कर देखा गया है। इसके आधार पर संतानहीनता के योगों का वर्णन इस प्रकार हैं:

बृहत पाराशर होरा शास्त्र में प्रेतशाप से संतानहीनता के योग के विषय में महर्षि पाराशर अध्याय 84 में श्लोक 9 से 16में कहते हैं।

पुत्रभाव में राहु हों, उन पर मंगल की दृष्टि हो तो सर्प शाप से पुत्र का अभाव होता है। पंचमेश राहु से युत हो, पंचम भावस्थ शनि पर चन्द्रमा की दृष्टि हो, पुत्र कारक (गुरु लग्नेश आदि) राहु से युक्त हों, पुत्र भावेश बलहीन हो, लग्नेश यदि मंगल से युक्त हो। पुत्र कारक मंगल से और लग्न राहु से युक्त हो तथा पंचमेश 6, 8, 12 वें भाव में हों बुध पंचमेश होकर मंगल के नवांश में मंगल से युक्त हों और लग्न में राहु और गुलिक हों। पुत्र भाव में मेष या वृश्चिक राशि हो तथा पंचमेश राहु या बुध से युक्त, दृष्ट हो। सूर्य, शनि, मंगल, राहु, बुध, गुरु ये पुत्र भाव में हों तथा पंचमेश और लग्नेश निर्बल हों। लग्नेश या पंचम भाव का कारक (गुरु) राहु से और पंचमेश मंगल से युक्त हों तो इन सब योगों में सर्प के शाप से सन्तान का अभाव समझना चाहिए।

महर्षि पाराशर अध्याय 83 में श्लोक 20 से 30 में पितृ शाप से संतान हीनता के योग इस प्रकार बतलाया है।

यदि शनि के नवांशगत नीच में सूर्य 5वें भाव में हों तथा उसके आगे और पीछे पाप ग्रह हों तो पिता के शाप से सन्तान का अभाव होता है। सूर्य पंचमेश होकर पापग्रह के साथ त्रिकोण में पापग्रहों के मध्य में हों या पापग्रह से दृष्ट हों। गुरु, सूर्य की राशि में हों और पंचमेश सूर्य के साथ हों तथा लग्न और पंचम में पापग्रह हो। लग्नेश बलहीन होकर पुत्रभाव में हो और पंचमेश अस्त हों तथा लग्न और पंचम भाव में पापग्रह हों। दशमेश पंचम में अथवा पंचमेश दशम भाव में हों तथा लग्न और पंचम भाव में पाप ग्रह हो। मंगल दशमेश होकर पंचमेश से युत हों, लग्न पंचम और दशम भावों में पापग्रह हो। दशमेश षष्ठ, अष्टम, द्वादश में हों, पुत्र कारक ग्रह पाप राशि में हों। पंचम भाव और लग्न के स्वामी पापयुक्त हो। यदि लग्न और पंचम में सूर्य, मंगल, शनि तथा व्यय भाव में राहु और गुरु हों। सूर्य अष्टम में, शनि पुत्र भाव में हों, पंचमेश राहु से युक्त हों और लग्न भी पाप से युक्त हों। द्वादशेश लग्न में, अष्टमेश संतान भाव में, दशमेश अष्टम में हों। षष्ठेश पंचम में, दशमेश षष्ठ भाव में तथा संतान कारक ग्रह राहु से युक्त हों तो इन योगों में पितरों के शाप से संतानहीनता होती है।

अध्याय 83 में श्लोक 34 से 50 में महर्षि पाराशर ने मातृ शाप से संतानहीनता के योग इस प्रकार बतलाए हैं -पंचमेश चन्द्रमा यदि नीच या पापग्रहों के मध्य में हों तथा चतुर्थ, पंचम भाव में पाप ग्रह हों तो माता के शाप से सन्तान का अभाव होता है। यदि लाभ भाव में शनि, चतुर्थ भाव में पापग्रह, पंचम में नीच के चन्द्रमा हों। पंचमेश दुःख स्थान6, 8, 10 में, लग्नेश नीच राशि में और चन्द्रमा पाप ग्रह से युक्त हों। पंचमेश दुःख स्थान6, 8, 12 में हों, चन्द्रमा पाप ग्रह के नवमांश में हों और लग्न एवं पंचम में पाप ग्रह हों। पंचमेश और चन्द्रमा यदि शनि, राहु, मंगल से युक्त होकर नवम या पंचम भाव में हों। मंगल चतुर्थेश होकर शनि, राहु से युक्त हों, पंचम और लग्न में सूर्य, चन्द्रमा हों। लग्नेश पंचमेश, षष्ठ भाव में, चतुर्थेश अष्टम में, अष्टमेश और दशमेश लग्न में हों। षष्ठेश, अष्टमेश लग्न में, चतुर्थेश द्वादश में, चन्द्रमा, गुरु दोनों पाप ग्रह युक्त होकर पंचम भाव में हों। लग्न यदि पापकर्त्तरि योग में हों, क्षीण चन्द्रमा सप्तम में, चतुर्थ, पंचम में राहु, शनि हों। अष्टमेश पंचम में और पंचमेश

अष्टम में हों, चतुर्थेश और चन्द्रमा दुःख स्थान 6, 8, 12 में हों। कर्क लग्न में मंगल, राहु हो और चन्द्रमा, शनि पंचम भाव में हों। लग्न पंचम, अष्टम द्वादश भावों में मंगल, राहु, सूर्य, शनि हों और चतुर्थेश, लग्नेश दुः स्थान 6, 8, 12 में हों। मंगल, राहु, गुरु, अष्टम भाव में और शनि, चन्द्रमा पंचम भाव में हों तो इस प्रकार के योगों में माता के शाप से सन्तान का अभाव जातक के जीवन में होता है।

महर्षि पाराशर ने अध्याय 83 में श्लोक 51 से 61 में भ्रातृ शाप से संतानहीनता के योग इस प्रकार बतलाया हैं- तृतीयेश, राहु, मंगल ये पुत्र भाव में और पंचमेश, लग्नेश मृत्युभाव में हों तो भ्राता के शाप से सन्तान हीनता समझना चाहिए। यदि लग्न और पंचम भाव में मंगल, शनि हों, तृतीयेश नवम भाव में और भ्रातृ कारक मंगल मृत्यु भाव में हों। नीचस्थ गुरु तृतीय भाव में, शनि पंचम भाव में और चन्द्रमा एवं मंगल दुःख स्थान 6, 8, 12 में हों। यदि लग्नेश द्वादश में, मंगल पंचम में, पंचमेश पाप ग्रह के साथ अष्टम भाव में हों। लग्न और पंचम भाव पापग्रह के बीच में हो और लग्नेश एवं पंचमेश दुःख स्थान 6, 8, 12 में हों। दशमेश पापग्रह के साथ तृतीय में और कोई शुभग्रह मंगल के साथ पंचम में हों। पंचम भाव में बुध की राशि में शनि, राहु हों, बुध, मंगल द्वादश भाव में हों। तृतीय में लग्नेश, पुत्रभाव में तृतीयेश हों, लग्न, तृतीय, पंचम में पापग्रह हों। तृतीयेश अष्टम में पुत्र कारक पुत्र भाव में शनि से युक्त हों। अष्टमेश पुत्रभाव में तृतीयेश के साथ हो और अष्टम में मंगल, शनि हों तो इन सब योगों में भाई के शाप से पुत्र का अभाव होता है।

इसी प्रकार महर्षि पाराशर ने अध्याय 83 में श्लोक 65 से 68में मातुल (मामा) शाप से संतानहीनता के योग इस प्रकार बतलाया है- पंचम भाव में यदि बुध, गुरु, मंगल, राहु हों लग्न में शनि हों तो मामा के शाप से सन्तान का अभाव होता है। लग्नेश और पंचमेश शनि, बुध, मंगल के साथ पुत्रभाव में हों। पंचमेश अस्त होकर लग्न में सप्तम में शनि लग्नेश बुध से युक्त हों। द्वादशेश के साथ चतुर्थेश लग्न में, चन्द्र, बुध, मंगल, पंचम में हों तो इन सब योगों में मामा के शाप से पुत्र का अभाव होता है।

महर्षि पाराशर ने अध्याय 83 में श्लोक 71 से 78में ब्रह्म शाप से संतानहीनता के योग इस प्रकार बतलाया है- यह दोष ब्राह्मण को अपमानित करने पर होता है। गुरु की राशि में राहु और पंचम भाव में गुरु हों तो ब्रह्म के शाप से सन्तान का अभाव होता है। यदि नवमेश पंचम में, अष्टम में गुरु, मंगल और राहु से युक्त हों। नवमेश नीच में, व्ययेश पंचम में राहु से युक्त हों। गुरु नीच राशि में, राहु लग्न में या पंचम में और पंचमेश त्रिक भाव्व 6, 8,12 में हो तो इन सब योगों में ब्रह्म के शाप से पुत्र का अभाव होता है।

इसी प्रकार महर्षि पाराशर ने अध्याय 83 में श्लोक 82 से 92 में पत्नी शाप से संतानहीनता के योग इस प्रकार बतलाया है- यह दोष पत्नी को अपमानित करने पर होता है। सप्तमेश पंचम भाव में, शनि सप्तमेश के नवमांश में हों, पंचमेश अष्टम भाव में हों तो स्त्री के शाप से सन्तान का अभाव होता है। यदि सप्तमेश अष्टम भाव में, द्वादशेश पंचम में तथा पुत्रकारक ग्रह गुरु पापग्रह से युक्त हों। शुक्र पंचम भाव में, सप्तमेश अष्टम भाव में और कारक ग्रह गुरु पाप से युक्त हों। द्वितीय भाव में पापग्रह, सप्तमेश अष्टम में, पंचम में पाप ग्रह हों। नवम भाव में शुक्र, सप्तमेश अष्टम में, लग्न और पंचम भाव में पापग्रह हों। यदि शुक्र भाग्येश हों, पंचमेश शत्रु राशि में हों, गुरु, लग्नेश, सप्तमेश ये तीनों दुः स्थान 6, 8,12 में हों। पंचम भाव में वृष या तुला राशि हो उसमें सूर्य, चन्द्र हों, द्वादश, लग्न और द्वितीय भाव में पापग्रह हों। सप्तम भाव में शनि, शुक्र, अष्टमेश पुत्र भाव में, लग्न में सूर्य, राहु हों। द्वितीय में मंगल, द्वादश में गुरु, पंचम में शुक्र और राहु हों। अष्टम भाव में द्वितीयेश और सप्तमेश हों, पंचम और लग्न में मंगल, शनि हों, पुत्र कारक पाप से युक्त हों। लग्न, पंचम, नवम में क्रम से राहु, शनि, मंगल हों पंचमेश और सप्तमेश अष्टम में हों तो इन सब योगों में स्त्री के शाप से पुत्र का अभाव होता है।

इसी प्रकार महर्षि पाराशर ने अध्याय 83 में श्लोक 95 से 105 में प्रेत शाप से संतानहीनता के योग इस प्रकार बतलाया है- यह दोष पितर का श्राद्ध कर्म नहीं करने पर होते हैं। पंचम भाव में शनि, सूर्य, सप्तम में क्षीण चन्द्र हों, लग्न और व्यय भाव में राहु, गुरु हों तो प्रेत के शाप से सन्तान का अभाव होता है। यदि पंचमेश शनि अष्टम भाव में, लग्न में मंगल तथा पुत्र कारक ग्रह गुरु अष्टम भाव में हों। लग्न भाव में पाप ग्रह, द्वादश भाव में सूर्य पंचम में मंगल, शनि, बुध और पंचमेश अष्टम में हों। यदि लग्न भाव में राहु ग्रह, पंचम में शनि, अष्टम में गुरु हों। लग्न भाव में शुक्र, गुरु, राहु और चन्द्र, शनि से युक्त हों, लग्नेश अष्टम भाव में हों। पंचमेश और पुत्र कारक दोनों नीच राशि में नीच ग्रह से दृष्ट हों। लग्न भाव में शनि पंचम में राहु अष्टम में सूर्य, द्वादश में मंगल हों। सप्तमेश दुःख स्थान 6,8,12 में हों, पंचम में चन्द्रमा, लग्न में शनि और गुलिक हों, अष्टमेश पंचम में शुक्र, शनि सहित हों पुत्र कारक नीच राशि में हों तो इन सब योगों में प्रेत के शाप से पुत्र का अभाव होता है।

महर्षि पाराशर ने अध्याय 73 के श्लोक 3 से 6में समुदायाष्टक वर्ग अध्याय में लग्नादि द्वादश भावों में 30 से अधिक रेखा होने पर उस भाव की वृद्धि कहा है और 25 से 30 रेखा होने पर भाव का फल मध्यम माना है। 25 से कम रेखा होने पर भाव से सम्बन्धित फल को कष्टप्रद या अशुभ बतलाया है।

ऊपर वर्णित योगों को दो भाग में विभाजित करते हैं- नियम एक से तीन तक को खण्ड अ और नियम चार और पांच को खण्ड ब में विभाजित करते हैं। स्त्री के लिए क्षेत्र स्फुट और पुरुष के लिए बीज स्फुट का मान मध्यम या निर्बल को चार्ट में गणना करते हैं और इस गणना में दोनों खण्ड के आधार पर संतानहीनता का विचार करते हैं।

साधारणतः सन्तान प्राप्ति में जो मुख्य बाधाएँ आती हैं। उन्हें तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है।

1. **दुर्भाग्य**- यह सबसे प्रमुख बाधा है जो संतान सुख से वंचित करती है। जन्म कुण्डली में ग्रह स्थिति कष्टकारी होना और दशा-अन्तर्दशा का विपरीत होना इसके लिए जिम्मेदार होते हैं। व्यक्ति 'दैवीय प्रकोप' और अन्य ऊपरी बाधा के कारण संतान सुख से वंचित हो जाता है।

2. **मानसिक दुर्बलता**- इस बाधा के कारण व्यक्ति शादी नहीं करना चाहता है या शादी होने के बाद जिम्मेदारी निभाने से भागता है। इन दोषों को भी कुण्डली में ज्योतिष विश्लेषण से जाना जा सकता है।

3. **दैहिक हीनता**- इस दोष के कारण व्यक्ति सन्तान उत्पत्ति में समर्थ नहीं होता। इसे हम बीज और क्षेत्र स्फुट के माध्यम से ज्योतिष में जानने का प्रयास करते हैं।

उक्त बातों को ध्यान में रखकर प्रयत्नशील होने पर निसंदेह सन्तान प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए अनुभवी ज्योतिषी और अनुभवी चिकित्सक का सहयोग आवश्यक है। ग्रहों के बाधा उत्पन्न करने की स्थिति में तत्सम्बन्धी ग्रह का उपचार करना लाभदायक होता है। संकेत निधि के अनुसार प्रत्येक ग्रह से सम्बन्धित उपचार इस प्रकार है।

सूर्य के पीड़ित होने पर हरिवंश पुराण का पारायण करवाना चाहिए।

चन्द्रमा और गुरु के कष्टकारी होने पर औषधी सेवन लाभकारी होता है।

मंगल और शनि की बाधा को दूर करने के लिए रुद्राभिषेक कराना चाहिए।

बुध और शुक्र द्वारा बाधा होने पर शिव जी की आराधना और रुद्राभिषेक कराना चाहिए।

राहु और केतु के दोष को शान्त करने के लिए गौ सेवा एवं कन्यादान करना चाहिए।

सन्तान गोपाल मन्त्र का विधिवत जाप करने से सभी ग्रहों के दोष दूर होते हैं।

हिन्दू धर्म में 'गर्भाधान संस्कार' सन्तान प्राप्ति की कामना को रखकर ही किया जाता है। इसके आयोजन का उद्देश्य यह है कि नव दम्पत्ति सन्तानोत्पत्ति के अपने दायित्व के प्रति जागरूक हों। यह षोड्श संस्कार में पहला संस्कार है और अति महत्वपूर्ण है। इस संस्कार को महत्व नहीं देने से संतान सुख में कमी आती है।

पुत्र की कामना से 'षष्ठी देवी' की पूजा अनुभूत प्रयोगों में से एक है। श्रीमद्भागवत के नवम स्कन्ध में नारद नारायण सम्वाद के अन्तर्गत इसका वर्णन मिलता है। सन्तान की अभिलाषा रखने वाले व्यक्ति शालिग्राम की शिला या घट या वटवृक्ष के मूल में देवी का ध्यान करें या घर की दीवार पर 'षष्ठी देवी' की मूर्ति ध्यान के अनुसार चित्रित कर ध्यान और पूजा करें और मन्त्र का यथाशक्ति जप करें। जप समाप्ति के बाद स्तोत्र का पाठ करें। इस प्रकार एक वर्ष तक 'षष्ठी देवी' की पूजा करने से सन्तान की प्राप्ति होती है।

सन्तान की अभिलाषा रखने वाले दम्पत्ति श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन नियम पूर्वक व्रत करें और व्रत कथा सुनें तो दीर्घजीवी और सुन्दर सन्तान की प्राप्ति होती है।

श्रीदुर्गा सप्तशती के प्रत्येक श्लोक के आदि और अन्त में काम बीज 'क्लीं' को लगाकर 41 दिनों तक पूरी सप्तशती का नित्य तीन पाठ करें तो उत्तम सन्तान की प्राप्ति होती है।

परंतु सप्तसती का पाठ करते समय उसके कीलन-उत्कीलन का विशेष ध्यान रखकर ही किया जाना चाहिए।

मंगल देव को ऋणहर्ता कहा गया है और संतान प्राप्ति को पितृ ऋण से मुक्ति माना जाता है अतः सन्तान के न होने पर और मंगल के पीड़ित होने पर मंगल देव की उपासना बहुत लाभकारी होती है। स्कन्दपुराण और मन्त्र महोदधि के अनुसार मंगल का व्रत मार्गशीर्ष (अगहन) या वैशाख मास के शुक्लपक्ष से एक वर्ष तक करना चाहिए किन्तु अन्य ग्रन्थकारों ने 21 मंगलवार को व्रत का विधान बताया है। इस व्रत में मंगल के यन्त्र का (जिसमें मंगल के 21 नाम होते हैं) पूजन तथा स्त्रोत्र का पाठ किया जाता है। उस दिन सूर्यास्त से पूर्व ही बिना नमक का भोजन करना चाहिए और लोहे के बर्तन में पकाया हुआ अन्न नहीं ग्रहण करना चाहिए।

इस प्रकार संतान उत्पत्ति में बाधा होने पर किसी भी विधि को अपनाकर सही रीति से पूजन किया जाए तो अपने सांसारिक और पारिवारिक जीवन को सुखद बनाया जा सकता है।

संतानहीनता से संबंधित योगों वाली जन्म पत्रिकाएं किसी अन्य अंक में प्रस्तुत करूंगा।

❖❖❖